Reg No 177/2008-2009 ISSN: 2322–0317

PSSH PERSPECTIVE of SOCIAL SCIENCES and HUMANITIES

An International Multidisciplinary Refereed Research Journal

VOL 2, NO 2

JULY - DECEMBER 201

Biannual

Editor

Dr Hemant Kumar Singh

Assistant Professor

Economics Department

Madan Mohan Malviya PG College

Deoria (UP)

Publisher

Herambh Welfare Society

Varanasi (India)

शिव प्रसाद मिश्र रुद्र के उपन्यास बहती गंगा में हनुमत कृपा का रूप

आभा सिंह[1]

'बहती गंगा' उपन्यास का नायक काशी है। काशी के विविध जीवन आयामों का निरूपण इस उपन्यास की विशेषता है। भक्ति के क्षेत्र में यह उपन्यास अपने धरातल पर अति विचित्र है। काशी को हिन्दू संस्कृति का केन्द्र माना जाता है। शैव उपासना पद्धति का यह प्राण है। इसके साथ–साथ शाक्त, वैष्ण तथा अन्य अनेक उपासना पद्धतियाँ यहाँ अविरल फूलती–फलती रही हैं। बौद्ध धर्म का आरम्भ भी यहीं से हुआ है। तात्पर्य यह है कि सभी हिन्दू और इतर भक्ति परंपरायें यहाँ विकसित हैं। इन सबसे अलग इस्लामिक भक्ति परंपरा के विकसित रूप यहाँ विद्यमान है।

भक्ति का कोशगत अर्थ है ''सेवा, सुश्रुषा, श्रद्धा, विश्वास, पूजा, अर्चन, स्नेह और अनुराग।''[2] शाण्डिल्य भक्ति सूत्र में ईश्वर में परम अनुरक्ति को ही भक्ति माना गया है। ''सा परानुरक्तिरीश्वरे''[3]। जबकि नारद भक्ति सूत्र में भक्ति की व्याख्या करते हुए यह बताया गया है कि भगवान की पूजा, अर्चना, उपासना आदि में अनुराग होना ही भक्ति है –''पूजादिस्वनुराग इति पराशर्यः''[4] नारद भक्ति सूत्र में ही गर्ग महानुभाव की भक्ति की स्थिति का चित्रण किया गया है। इनके अनुसार भगवान की कथा आदि में अनुराग होना ही भक्ति है –''कथादिस्थिति गर्गः''[5]

इस प्रकार जहाँ पाराशर ने पूजा पर जोर दिया है, वहाँ गर्ग ने कथादि पर। भगवान की दिव्य लीला महिमा, उनके गुण और नामों के कीर्तन या श्रवण में मन लगाना निःसन्देह भक्ति का प्रधान लक्षण है। संसार में अधिकांश मनुष्य तो ऐसे है, जिन्हें भगवान और भगवान की कथा से कोई मतलब ही नहीं है। दिन–रात विषय चर्चा में ही उनका जीवन बीतते वे न तो कभी भगवान का गुणगान करते हैं और न उन्हें भगवच्चर्चा सुहाती है। इस अवस्था में जिन मनुष्यों का मन भगवान के गुणानुवाद सुनने में लगा रहता है। वे अवश्य भक्त है और उनके द्वारा यह किया गया कार्य ही भक्ति है।[6]

काशी परम पावनी माँ गंगा के किनारे बसा प्राचीन शहर है। यहाँ जहाँ

[1] **शोध छात्रा, बयालसी पी०जी० कालेज, जलालपुर, जौनपुर**

[2] भार्गव हिन्दी शब्दकोष–पंडित रामचन्द्र पाठक, पृ0 467

[3] शाण्डिल्य भक्ति सूत्र 1/1/2

[4] नारद भक्ति सूत्र –16

[5] नारद भक्ति सूत्र– 17

[6] सखा भक्ति दर्शन और असछायी कवि : डा0 रामध्यान शर्मा, पृ0 26–27

कहीं हर तरफ मंदिर और मंदिर भी एक से बढ़कर एक। जिनकी ख्याति विश्वभर में है। पश्चिम–दक्षिण कोने की ओर एकदम काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के निकट संकट मोचन भगवान का अति प्रसिद्ध और प्राचीन मंदिर है। ऐसी लोक मान्यता है कि जो भी व्यक्ति संकटमोचन हनुमान जी का दर्शन करता है, उसकी सभी मनोकामना पूर्ण हो जाती है।

आज तो संकट मोचन हनुमान जी का दर्शन बहुत आसानी से सुलभ हो जाता है। साधन और संसाधन दोनों की सुविधा उपलब्ध है। लेखक ने बहती गंगा में जिस समय का उल्लेख करता है उस समय साधन–संसाधन दोनों उपलब्ध नहीं थे। घना जंगल शिवाला के बाद आगे बढ़ने का तो कोई हिम्मत ही जुटा नहीं पाता था। इसमें भी वारिस का महींना–नाले का उफान। काशी के झालर गुरू का नित्य का नियम यह था कि जब तक शाम को संकट मोचन हनुमान जी का दर्शन नही कर लेते वे खाना नहीं खाते थे। भक्त की आस्था और भगवान की परीक्षा हमेंशा से चलती आ रही है। संकट मोचन हनुमान जी की कृपा जिस पर हो जाय, उसके लिए कुछ भी असंभव नहीं है। मान्यता है कि संकट मोचन महाराज जी श्री रामचन्द्र जी महाराज के अनन्य भक्त है। इनके ऊपर भगवान की महती कृपा थी। ये काल, देश, युग आदि से परे है। इनका दर्शन सतयुग, त्रेता, द्वापर से कलयुग तक में हो रहा है। ऐसा भी कहा जाता है कि भगवान संकट मोचन हनुमान जी साक्षात शिव के मूर्तिमान रूप है, विग्रत है, अवतार है।

काशी धर्म, आस्था, भक्ति, संस्कृति और शिक्षा की स्थली है। भगवान शिव साक्षात् रूप में यहाँ विराजमान है। परम पावनी गंगा के तट पर स्थित यह नगरी पूर्णतः पवित्र है। इसके चारों सीमा पर धर्म के मूल स्तम्भ विराजमान है। एक तरफ भगवान श्री राम तो दूसरी तरफ माँ दुर्गा, तीसरी तरफ भगवान बुद्ध तो चौथी तरफ संकट मोचन हनुमान विराजमान है और नगर के मध्य में अविनाशी अवघरदानी भगवान शिव। यहाँ दूर–दूर से लोग आकर माँ गंगा की गोदी में डुबकी लगाकर धन्य होते है। गंगा के किनारे अनेक पण्डा रहते है, जिन्हें यात्रीजन दान दक्षिणा दिया करते है। उन्हीं पंडितों में झालर, उपाध्याय, ठाकुर भी थे, किन्तु बहुत दिनों से वे गायब थे। उनकी पत्नी गोदावरी आत्महत्या करना चाहती थी, एकदम अभाव के कारण वह अपनी धोती से फांसी लगाने की सोच रही थी तथी उसकी निगाह हनुमान जी की तस्वीर पर पड़ी। वह निवर्सन होने की कल्पना मात्र से लज्जित हो गयी और गंगा में डुबकर मरने की ठानकर एकदम सुबह गंगा तट पर आ गयी। अब तक घाट पर ननकू, हाटिया और जीतू मॉझी आ चुके थे। ठंड बहुत ज्यादा होने की वजह से यात्री वगैरह के आने की संभावना बहुत कम थी। मॉझी गंगा में से पैसे ढूढ रहा था। कुछ मिले भी। एक बड़ी रोहू मछली भी मिली, उसके बच्चे भी आ चुके थे और उनके उस मछली के खाने को लेकर विवाद होते–होते बचा। तभी एक बजड़ा किनारे आकर रूका और उस पर सवार यात्री ने झालर गुरू के बारे में पूछा। गोदावरी अपना पैर पानी में डाले इन्तजार कर रही थी कि हटिया और माझी हटे तो वह अपने को गंगा में समर्पित कर दे किन्तु अब यात्री से अपने पति के बारे में पूछते हुए उसने अपने शरीर को मानो कान बना दिया था और उसकी बातें सुनने

लगी। ननकू घटिया ने झालर गुरू के अत्यन्त दुबले होने की बात कहीं और बताया कि जो भी चाहता उन्हे तंग करता तभी उस यात्री ने कहा कि मेरे ठाकुर कमजोर नहीं बहुत शक्तिशाली थे। जीतू ने यात्री को बताया कि हनुमान जी के दर्शन के बाद उनमें शक्ति आ गयी थी।

ननकू धटिया, झालर ठाकुर के बारे में बताने लगा कि उनका नियम था कि बिना संकट मोचन का दर्शन किये वे अन्न नहीं ग्रहण करते थे। दो साल पहले सावन के महीने में सूर्य ग्रहण पड़ा था। यजमान यात्री के चक्कर में उन्हें दिन को हनुमान जी के दर्शन का ध्यान ही नहीं आया। रात को नौ बजे जब वे भोजन करने बैठे तो उन्हें हनुमान जी के दर्शन की याद आया। उनके घर से मंदिर डेढ़ कोस की दूरी पर था। झालर ठाकुर चल पड़े। आकाश में बादल घिरे हुए थे। बिजली तड़क रही थी। बूंदे पड़ रही थी। दौड़ते हुए ठाकुर हनुमान जी के दर्शन के लिए जा रहे थे। अस्सी का नाला भयंकर उफान पर था। उसे पार करना असंभव ही था। वे अपना धोती दुपट्टा एक पेड़ की डाल पर टांग दिया। लंगोट पर गमछा पहना और कुदने ही वाले थे कि उनका हाथ पकड़ कर पीछे से किसी ने खींच लिया और उन्हें घर जाने को कहा। झालर गुरू ने अपने दर्शन का नियम बताया। उस व्यक्ति ने स्वयं को हनुमान जी कहा तो झालर ठाकुर नाराज हो गये और प्रमाण मांगने लगे। वह व्यक्ति नहीं सचमुच हनुमान जी थे। उन्होंने झालर में अपना रूप दिखाया और वर मांगने को कहा। अपनी कमजोरी के हिसाब से उन्होंने एक उंगुली का बल मांगा तो न सहन कर पाने की स्थिति में हनुमान जी ने अपना एक बाल तोड़कर उने मुख में डाल दिया। बस क्या था झालर गुरू दोड़ते हुए घर आये जो कुछ भी मिला सब खा गये। घर के लोगों ने उनके ऊपर प्रेत–भूत का प्रभाव मानकर कमरे में बन्द कर दिया। सुबह वे गंगा के घाट पर आये। एक मढ़ी पर हाथ रख कर खड़े थे कि लोगों ने परिहास करते हुए कहा कि मढ़ी टेढी हो जायेगी। बस क्या था गुरू ने मढ़ी पर दबाव दिया और मढ़ी टेढ़ी हो गयी फिर गुरू ने उसे एक पत्थर के सहारे तिरछी खड़ी कर दी। वह मढ़ी आज भी तिरछी है, मढ़ी की ओर संकेत करके ननकू घटिया ने कहा उसके बाद गुरू गंगा में कूद पड़े और उनका पता नहीं।

बजड़े पर आया हुआ यात्री बंगाली था। उसने कहा कि इस घटना का ज्ञान हमें है। उस यात्री के भाई मुर्शिदाबाद राजा के दीवान था। राजा साहब भी झालर ठाकुर के यजमान थे। सावन के महीने में सबेरे राजा साहब का दरबार लगा था तभी एक अंगोछा पहने पानी से तर–बतर गुरू दरबार में घुस पड़े और भूखे होने की बात कहीं। भंडारी से गुरू ने डेढ़ मान ऑटा लिया और उपले में आग लगाकर मोटी–मोटी लिट्टी बनाकर सिद्ध करने लगे। राजा ने यह सूचना पाकर एक महावत को बुलाकर हाथी से गुरू को मार डालने का संकेत दिया क्योंकि उसके अनुसार झालर गुरू विकृत हो गये थे। महावत हाथी लेकर उनकी ओर आया। झालर गुरू भोजन कर रहे थे। उन्होंने संकेत से महावत को मना किया पर वह न माना तो उन्होंने

लिट्टी का एक टुकड़ा खींचकर हाथी को मारा और हाथी पीछे की ओर भाग निकला। जब झालर गुरू भोजन कर लिये तो राजा उनके पास आये और कहा कि साल भर पहली एक गैंडा उद्यान में आ गया था। हम सबने उसे उसी उद्यान में बंद कर रखा है। उद्यान नष्ट हो रहा है। आप हमारी मदद कीजिए। ठाकुर ने राजा की बात स्वीकार कर ली और उद्यान के दरवाजे को पैर से तोड़कर उद्यान में घुसे। मानव गंध पाकर गैंडा ने उनके उपर आक्रमण किया तभी झालर गुरू उसे पकड़कर उसका एक पैर, पैर से दबाया दूसरा हाथ से पकड़कर ऊपर खींच दिया। नये कपड़े की तरह गैंडा फट गया और गैंडा के खून से गुरू ने राजा समेत पितरों का तर्पण किया और वहां से बिदा लिये।

उसके बाद उस यात्री ने ननकू धटिया से पूछा कि गुरू के लड़के बच्चे तो होंगे। ननकू ने बताया कि बच्चे तो नहीं है किन्तु उनकी धर्मपत्नी है। उस यात्री ने सबको धन्यवाद दिया और ठाकुर की पत्नी गोदावरी का दर्शन करने की बात कहीं क्योंकि उनका पति देवता थे। गोदावरी ने सारी बात सुन ली थी। उसने पानी में से अपना पैर निकाल लिया और घर की ओर लौटने के लिए सीढ़िया चढ़ने लगी। उसकी आत्मा से हत्या का विचार एकदम से बदल गया था। उसे अपने पति पर गर्व होने लगा था। धर्म भक्ति और आस्था के साथ हनुमतकृपा का यह रूप शिव प्रसाद मिश्र के उपन्यास बहती गंगा में चित्रित है।